मार्च 2021

मूल्य :20/-

डाक पंजीयन क्र.: M.P. / I.D.C. / 892 / 2021-23
पत्र पंजीयक क्र.: M.P. 15059

संस्कार सागर

वर्ष :22 | अंक : 263

संस्कार सागर पढ़िये ✲ संस्कार गढ़िये ✲ संस्कार सागर के सदस्य बनिए

चंदेल शासन काल में जैनधर्म का विकास

शोधछात्रा : श्रीमति अर्पिता रंजन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग
ग्रेटर नोयडा (उ.प्र.)

जैनदर्शन के मूल सिद्धांत अहिंसा, सत्य, अस्तेय एवं अपरिग्रह हैं ।

इनका प्रभाव जन-जीवन के साथ समाज, व्यवसाय, संस्कृति एवं राजनीति पर भी स्पष्ट परिलक्षित हुआ है। भारतीय संस्कृति समन्वय एवं सद्भावना की संस्कृति है, जिसमें सभी धर्मों एवं जातियों को समानाधिकार प्राप्त है। प्राचीन काल से ही जैन सिद्धांतों का प्रभाव सभी प्रदेशों में देखा गया है । जिनमें बुन्देलखण्ड का इतिहास अतिप्राचीन है, समय-समय पर शासकों, निवासियों, प्राकृतिक परिस्थितियों, राजनैतिक सीमाओं तथा राजवंशों के आधार पर इसका नामकरण होता रहा है[1] । इसकी सीमा मुख्यतः यमुना एवं वेतवा के मध्य मानी गयी हैं।[2]

पौराणिक सन्दर्भानुसार रामायण एवं महाभारत काल से बुन्देलखण्ड में जैनधर्म का प्रभाव देखा गया है। वर्तमान में भी जैन दर्शन का प्रभाव दृष्टव्य है।

जैनियों के तर्कशास्त्र, व्याकरण रचना, ज्योतिष एवं औषधि शास्त्र आदि विधाओं से प्रभावित होकर कितने ही प्रभावशाली ब्राह्मणों ने भी जैनमत ग्रहण कर लिया था। जैनधर्म को जो उर्वर क्षेत्र तथा शासकीय आश्रय दक्षिण में प्राप्त हुआ, वह उस हद तक उत्तर भारत में प्राप्त नहीं हो सका। फिर भी जैन पण्डितों उत्तर भारत के राजपूत राजाओं के यहाँ भी प्रभाव प्रतिष्ठित करने का अधिकाधिक प्रयत्न किया।[3]

मौर्यवंश के प्रसिद्ध शासक चन्द्रगुप्त मौर्य (317 से 298 ईसा पूर्व) ने जैनधर्म स्वीकार कर जैनाचार्य अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु से श्रवणबेलगोला में दिगम्बरी (मुनि) दीक्षा ग्रहण की थी।[4]

चन्द्रगुप्त के पुत्र बिम्बसार (298 से 272 ईसा.पूर्व) ने भी जैनधर्म को स्वीकार किया था। इसी परम्परा में सम्प्रति (272 से 190 ईसा पूर्व) ने जैनधर्म का भारत में ही नहीं अफ्रीका, मिश्र, अरब, यूनान आदि देशों में प्रचार प्रसार किया था।

गुप्तवंश के प्रथम शासक चन्द्रगुप्त (प्रथम) 315 से 328 ई. महाराजाधिराज उपाधि का धारी था। आपका विवाह भगवान महावीर के लिच्छिवी वंश की राजकन्या कुमारदेवी के साथ हुआ था।

आपने आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ स्वामी का मन्दिर बनवाया था । विदिशा की खुदाई में चन्द्रप्रभ की ऐसी कला पूर्ण मूर्ति मिली है जिस पर गुप्तवंशी ब्राह्मीभाषा में चन्द्रप्रभ नामांकित है।[5]

समुद्रगुप्त सन् 328 से 378 ई. ने अपने राज्य में कई जैन मन्दिर बनवाये एवं मन्दिर की पूजा तथा संरक्षण के लिये विपुल द्रव्य प्रदान किया । चन्द्रगुप्त (द्वितीय) सन् 379 से 414 ई. जैन आचार्य सिद्धसेन के शिष्य थे । आपकी अहिंसक जीवन शैली ने सभी शासकों को प्रभावित किया आपके सेनापति अमरदेव भी जैन थे।

स्कंधगुप्त का राज्य भी समुद्रगुप्त के समान था तथा बुन्देलखण्ड भी उसी राज्य में था।[6]

चीनी यात्री फाह्यान ने आपके शासन में अहिंसक जीवन शैली का उल्लेख करते हुये लिखा, आपके राज्य में मांस, मदिरा तो क्या लहसुन, प्याज एवं कन्दमूल का भी प्रयोग नहीं होता था।

कुमारगुप्त सन् 414 से 455 ई. के शासनकाल में जैनधर्म का विशेष प्रचार था।

प्रतिहार शासक मिहिर भोज (836 ई.) के शासन का उल्लेख देवगढ़ के अभिलेख में मिला हैं।[7] देवगढ़ जैन मूर्तिकला का विशिष्ट क्षेत्र हैं, जहाँ आज भी सैकड़ों जैन मूर्तियाँ संरक्षित हैं। भोज का साम्राज्य पूरे बुन्देलखण्ड में फैला था । इसके पश्चात् उसका पुत्र महेन्द्रपाल उत्तराधिकारी बना। वत्सराज के शासन में महावीर मन्दिर का निर्माण हुआ तथा नागभट्ट ने जैन धर्म को स्वीकार किया था।[8]

जैन धर्म व्यापारियों एवं व्यावसायिओं के मध्य लोकप्रिय था। इन वैश्यों को जैन समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त थी। दण्डनायक विमल, वास्तुपाल, तेजपाल, पाहिल एवं जगदु के शासन में शैवधर्मावलम्बी होने के बाद भी भोज सन् 1010 से 1062 ई. ने जैन धर्म एवं साहित्य को संरक्षण दिया था। भोज ने आचार्य प्रभाचन्द्र के चरणों की वंदना की थी।[9]

बुन्देलखण्ड में प्रतिहार शासकों की शक्ति क्षीण होते ही चंदेल सामंत स्वतंत्र हो गये।[10]

चंदेशवंश का आदिपुरुष प्रथम शासक नन्नुक चन्द्रप्रभ भगवान का इतना भक्त था कि वह चन्द्रवर्मन के नाम से प्रसिद्ध हुआ, उसकी संतान चंदेल वंशी कहलाई।[11] अनुश्रुतियों के अनुसार चंद्रवर्मा ने 16 वर्ष की आयु में विशेष महोत्सव आयोजित करके महोत्सव नगर की स्थापना की जो महोवा के नाम से जाना जाता है। यह सदियों तक चंदेलों की राजधानी रहा। वहाँ की खुदाई में मिली जैन प्रतिमाओं से चंदेल शासकों की जैनधर्म के प्रति श्रद्धा का संकेत मिलता है।

चंदेल शासकों की परम्परा में बाक्पति (850 ई) जेजा एवं बेजा 870 ई., राहिल 890 ई., हर्ष 910 ई. यशोवर्मन 925 ई., धंग 954 ई. ने शासन किया। शासक धंग ने प्रथम वर्ष 954 ई. में खजुराहो के प्रसिद्ध पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया। राजा धंग जैनमुनि वासवचंद का बड़ा भक्त था। आपकी धार्मिक सहिष्णुता, समदर्शिता तथा प्रजा वत्सलता के कारण ही विभिन्न स्थानों विशेषतः सीरोन, खजुराहो, देवगढ़, दुधही, महोबा, कालंजर, चांदपुर एवं नवागढ़ में अन्य धर्मों के सुविशाल और भव्य मंदिरों की भाँति जैनों के भी अतिभव्य कलात्मक एवं उत्कृष्ट मंदिरों का निर्माण कराया जा सका।[12]

महाराजा धंग के राज्यमान **कुलामात्यवृन्द** उपाधि से विभूषित श्रेष्ठी पाहिल एवं जीजू न भगवान शांतिनाथ एवं पार्श्वनाथ जिनालय का निर्माण जैनाचार्य वासवचन्द्र के शिष्यत्व में कराया तथा उसके संरक्षण हेतु 7 वाटिकाओं का दान किया।[13]

खजुराहो के अभिलेखों में धंगदेव एवं मदनवर्मन के नामोल्लेख के साथ जैनधर्म और कला को वृद्धिगत करने वाले श्रेष्ठियों, जैन मुनियों, आचार्यों तथा शिल्पियों के नामों का विशेष उल्लेख है। यह लेख 10वीं शदी से 12वी शदी ई. के मध्य खजुराहो में जैनधर्म और संघ के प्रभावशाली होने की पुष्टि करते हैं ।[14]

इन लेखों में धंग के महाराज गुरु वासवचन्द्र, देवचन्द, कुमुदचंद, चारुकीर्ति, कुमारनंदि, योगचन्द्र, योगनन्दि, यक्षदेव, विशालकीर्ति आदि निर्ग्रन्थ दिगम्बर आचार्यों एवं साधुओं द्वारा धर्म प्रभावना का उल्लेख हैं।[15]

उपरोक्त श्रमणों का श्री बिहार बुन्देलखण्ड के खजुराहो से महोवा नवागढ़, दुधही से देवगढ़ तक होने के संकेत मिलते हैं । नवागढ़ प्राचीन नंदपुर में ब्र. जयकुमार जी द्वारा अन्वेषित

प्राकृतिक शैलाश्रयों में संत शयन स्थल, शैलाश्रय में उत्कीर्ण गुप्तकालीन कायोत्सर्ग मुद्रा एवं चरण वहाँ तीसरी सदी के पहले से जैन संतों के आवागमन के साक्ष्य हैं ।

मूर्ति निर्माता श्रेष्ठियों में पाहिल के पुत्र साल्हे एवं पौत्र महागण, महिचंद , श्रीचंद जिनचंद और उदयचंद के नाम बुन्देलखण्ड में मूर्ति एवं मंदिर निर्माण में विशेष रूप से अंकित हैं।[16] इस परिवार ने लगभग 200 वर्षों (सन् 954 से 1158 ई.) तक जैनमूर्ति एवं जैन मंदिर निर्माण में सतत सहयोग किया है।

नवागढ़ के अभिलेखीय अन्वेषण में मूर्ति प्रतिष्ठा एवं मंदिर निर्माता श्रेष्ठियों में पाहल के नाम की प्रशस्ति तथा मूर्ति, पाहल के पौत्र महिचंद का नाम स्तंभ अभिलेख तथा महावीर संवत् 1195 पर अंकित है तथा उनकी मूर्ति भी संगृहीत है, उससे सिद्ध होता है उन्होंने खजुराहो के साथ नवागढ़ में भी मंदिरों का निर्माण कराया था।[17]

अन्य मूर्ति प्रतिष्ठापकों में देल्हण संवत् 1195, सलदेसल संवत् 1202, रामचन्द्र, सान्ति जाल्हण, रासल संवत् 1203, सन्न संवत् 1490ए वसराज संवत् 1511, वीघानन्द संवत् 1548, नल्ह संवत् 1781, अर्जुन संवत् 1971 तथा वर्तमान में कई श्रेष्ठियों के नाम उल्लेखनीय हैं।[18]

एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है महाराजा हर्ष सन् 910 ई. के पुत्र यशोवर्मन (सन् 950 ई.) चंदेल वंश के प्रथम स्वतंत्र शासक थे आपने जैनधर्म का विस्तार ही नहीं किया, वह स्वयं इतने प्रभावित थे कि संसार के भय से राज्य त्यागकर नंदि संघ के आचार्य वीरनन्दि से श्रवणबेलगोला में दीक्षा लेकर गोल्लाचार्य के रूप में अतिशय प्रभावना की।[19]

इस तथ्य की पुष्टी श्रवणबेलगोला के शिलाशासन में रामनवमी मंडप, आदिनाथ मंदिर एवं महादेवी शान्तला मंडप के अभिलेख से तो होती ही है, डॉ भागचन्द्र भागेन्दु, डॉ यशवंत मलैया, डॉ. भागचन्द्र भास्कर, ब्र. डी. राकेश सागर, ब्र. जयकुमार निशांत, डॉ. शीतलचन्द्र जी, एवं पं. विनोद कुमार ने भी बहुमत से स्वीकार किया है।[20]

गोल्लाचार्य की शिष्य परम्परा में त्रैकाल्ययोगी, अभयनन्दि, माणिक्यनन्दि, प्रभाचन्द्र, नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक (भगवान गोमटेश बाहुबली की मूर्ति के प्रतिष्ठाता आचार्य) आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती , नयनन्दि, वसुनन्दि (जयसेन) जैसे महान आचार्य हुये हैं।[21]

इसके पश्चात् चंदेल शासक मदनवर्मन की धार्मिक सहिष्णुता के कारण खजुराहो अहार (मदनेशपुर), बानपुर, दुधही, चांदपुर, नवागढ़, कुण्डलपुर एवं सौरों जैन तीर्थ के रूप में सुस्थापित हुये।[22] आपके राज्यकाल में जैन धर्म का विशेष रूप से प्रचार-प्रसार हुआ। आपके जैन धर्मावलम्बी होने एवं जैन साधुओं से प्रभावित होने के कई साक्ष्य मिलते हैं । आपकी परिषद् में बहुत से जैन मंत्री एवं कोषाधिपति थे। आपको मदन ब्रह्म नाम से ख्याति मिली है।[23]

मदनवर्मन स्वयं जैन धर्मावलम्बी तो हुये परन्तु अन्य मतों से कोई वैमनस्य नहीं था।[24]

यह उल्लेखनीय तथ्य है कि चन्देल राजाओं में यशोवर्मन वैष्णव (अंत में जैन मुनि गोल्लाचार्य हुये) धंग शैव एवं मदनवर्मन जैन था।[25]

परमर्द्धि देव के राज्य में धनधान्य की कमी नहीं थी। अनेक मन्दिरों एवं तड़ागों के निर्माण से

उस काल की समृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है, वर्तमान में टीकमगढ़ (म.प्र.) जिले में 962 चंदेल तालाब आज भी अन्वेषित किये गये हैं।[26]

परमर्द्धि देव स्वयं ब्राह्मण धर्म के समर्थक थे किन्तु सभी को अपने धर्म पालन की स्वतंत्रता थी। ब्राह्मण धर्म के साथ ही साथ जैन धर्म का भी प्रचार था। अनेक जैन मंदिरों का निर्माण तथा जैन मूर्तियों की प्रतिष्ठा भी उस काल में हुई। शासकीय पदों की नियुक्ति में धर्म का प्रतिबन्ध न था। माहिल जो मन्त्रीपद पर प्रतिष्ठित था वह जैन था[27], माहिल की बहिन परमर्द्धि देव की महारानी महलना भी जैन परिवार की थी। जिससे परमर्द्धिदेव ने उनके पिता वासुदेव को पराजित कर पाणि ग्रहण किया था।

परमर्द्धि देव ने अजयगढ़ में तालाब और मन्दिर बनवाये महोबा में सन् 1167 ई. में जैन मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई। सन् 1180 (संवत् 1237) में अहार जी (मदनेशपुर) में मूलनायक शान्तिनाथ की 21 फुट ऊँची मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई। जिसमें नंदपुर (वर्तमान नवागढ़) में जिनालय बनाने का उल्लेख हैं।[28]

नवागढ़ के अभिलेखीय अन्वेषण एवं सर्वेक्षण में प्राप्त सम्बंधित साहित्य, इतिहास ग्रंथों, अभिलेखों में नवागढ़ (नंदपुर) का नाम विशेष रूप से दृष्टव्य हुआ है।[29]

नवागढ़ के आसपास ऊमरी, बड़ागांव, द्रोणगिरि,अहार आदि क्षेत्रों के सर्वेक्षण में एक तथ्य और प्राप्त हुआ है कि बुन्देलखण्ड में धसान नदी से संलग्न ग्रामों एवं नगरों में जैन समाज की गोलापूर्वन्वय का बाहुल्य रहा है। उस अन्वय के श्रेष्ठियों ने समय-समय पर मन्दिरों का निर्माण कराकर मूर्ति प्रतिष्ठा कराई हैं।[30]

प्राचीन काल से वर्तमान तक निर्मित जिनालयों की एक लम्बी श्रृंखला है। शायद ही ऐसा गांव होगा जहाँ जैन धर्मावलम्बी न रहते हों और उनके द्वारा बनाये जैन मन्दिर न हों।[31]

पटेरिया क्षेत्र (गढ़ाकोटा म.प्र.) में श्रावक शिरोमणि श्रेष्ठी शाह रामकिशुन मोहनदास जैन ने एक दिन के रूई के व्यापार की मुनाफा से एक मन्दिर का निर्माण कराकर प्रतिष्ठा कराई।[32] इससे सिद्ध होता है बुन्देलखण्ड के तत्कालीन प्रमुख नगरों में जैन समाज के गोला पूर्वान्वय के श्रेष्ठियों का बाहुल्य एवं वर्चस्व रहा है। वह अत्यंत वैभवशाली, प्रभावशाली एवं समृद्ध रहे हैं।

यहाँ तक कि चंदेल शासक मदनवर्मन द्वारा स्थापित महत्वपूर्ण जैन तीर्थ क्षेत्र मदनपुर एवं मदनेशपुर (अहार) में अधिकांश मंदिर गोलापूर्वन्वय के श्रेष्ठियों द्वारा निर्मित कराये गये हैं।[33] यही नहीं प्राचीनतम क्षेत्र सोनागिरि, द्रोणागिरि नवागढ़, नैनागिरि, चन्देरी, कुण्डलपुर, महोबा, पपौरा, पटेरिया, क्षेत्रपाल (ललितपुर), फलहोड़ी बड़ागाँव, दरगुवां, कारीटोरन, गिरार आदि के कई मन्दिरों में उनके द्वारा विराजित मूर्तियाँ प्राप्त हैं।[34] नवागढ़ की बगाज टोरिया पर मदन वर्मन की नखशिख अलंकृत एक मूर्ति विराजमान है, जो उनकी यशोगाथा का साक्ष्य हैं।

मुझे नवागढ़ के अभिलेखीय सर्वेक्षण में गुप्तकालीन उत्कीर्ण मुद्रा, प्रतिहार कालीन मूर्ति शिल्प के साथ कई मूर्तियों के पादपीठ पर संवत् अभिलेख मिले हैं।

संग्रहालय में संगृहीत प्रतिमाओं में- ऋषभदेव संवत 1123, उपाध्याय संवत् 1188,

महावीर संवत् 1195, शांतिनाथ एवं अन्य संवत् 1202, चार मानस्तंभ संवत् 1203, आसन संवत् 1781 वेदियों में विराजित प्रतिमाओं में चौबीसी संवत् 1490, संभवनाथ संवत् 1511, ताम्र पार्श्वनाथ संवत् 1548, पार्श्वनाथ संवत् 1586, विमलनाथ संवत् 1885, महावीर संवत् 1971 से लेकर वर्तमान संवत् 2076 तक की प्रतिमा प्रतिष्ठा की श्रृंखला प्राप्त हुई है।

इस श्रृंखला में एक तथ्य और उद्घाटित हुआ है, तीर्थंकर महावीर, शांतिनाथ चारों मानस्तंभ प्रशस्ति, घुटना तथा अन्य खंडित अवयव में जैन परम्परा के गोलापूर्व अन्वय के श्रेष्ठियों के नाम अंकित हैं।

इस तथ्य का डॉ. मारूतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ. शान्ति स्वरूप सिन्हा वाराणसी, डॉ कस्तूरचन्द्र सुमन, डॉ. के.पी. त्रिपाठी, हरिविष्णु अवस्थी टीकमगढ़ ने अपने सर्वेक्षण में उल्लेखित किया है।[35]

नवागढ़ के क्षेत्र निर्देशक ब्रह्मचारी जयकुमार जैन निशान्त प्रतिष्ठाचार्य द्वारा अन्वेषित जैन पहाड़ी के प्राकृतिक साधना शैलाश्रय में नवागढ़ के श्री रामनारायण यादव एवं श्री रामनाथ गूजर द्वारा अन्वेषित गुप्तकालीन (तीसरी सदी) जैन मुनि की कायोत्सर्ग मुद्रा तथा चरण चिन्हों[36] से सिद्ध होता है, यहाँ तीसरी सदी के पहले से जैन आचार्य एवं मुनि संघों का श्री विहार बुन्देलखंड मेंहोता रहा हैं। उनकी चर्या में वहाँ के नगरों के समर्पित गोलापूर्वन्वय परिवारों ने वैयावृत्ति (सेवा) करने का सौभाग्य प्राप्त किया। वह उनसे प्रभावित ही नहीं थे अपितु उस अन्वय के श्रेष्ठियों ने दीक्षा लेकर श्रमण परम्परा का उन्नयन भी किया है।

मुनि गुणचन्द्र संवत् 353 (सन् 296 ई.) वज्रनन्दि संवत् 364 (सन् 307 ई.)[37] चन्देल शासक यशोवर्मन संवत् 1007 (सन् 950 ई.) गोल्लाचार्य के नाम से जिननें श्रवणबेलगोला में दीक्षा ली थी।[38] तथा गुणचन्द्र संवत् 1048 (सन् 991 ई.) ने दीक्षा लेकर इस अन्वय का बहुमान बढ़ाया है।

उपरोक्त अन्वेषणानुसार नवागढ़ प्राचीन नंदपुर की स्थापना गुप्तकाल के पूर्व हुई थी, जिसका विकास गुप्तकाल एवं प्रतीहार काल में हुआ तथा चंदेल शासन काल में यह व्यावसायिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, शैक्षणिक, राजनैतिक एवं धार्मिक सद्भाव के विशेष समृद्धशाली नगर के रूप में प्रतिष्ठित हुआ था।

खनन के समय प्राप्त मंदिरों के अवशेष, मिट्टी एवं पाषाण के मन के, विभिन्न मुकुटों वाले शीर्ष, कुमार अकलंक एवं निकलंक बिम्ब उपाध्याय के विशिष्ट बिम्ब, शताधिक विशाल एवं मनोज्ञ मूर्ति शिल्प, चंदेल बावड़ी तथा कूप, पहाड़ियों पर नगरीय संयोजना के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं।[39]

मदनपुर के अभिलेखानुसार संवत् 1239 में[40] चंदेलों के असीम वैभव एवं समृद्धि के आकर्षण तथा राजनैतिक वैमनस्यता से बुन्देलखंड (जेजाक मुक्ति) का पराभव परमर्द्धिदेव (परमाल) तथा दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान के युद्ध से हुआ। जिसमें महोबा, लासपुर (बिलासपुर) सल्लक्षणपुर, मदनपुर, चांदपुर, दुधही, नवागढ़ सहित कई नगरों को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया गया।[41]

इस प्रकार बुन्देलखंड के विशिष्ट नगरों की ऐतिहासिकता, सांस्कृतिक वैभव, विशाल भवनों धार्मिक स्थापत्यों, मूर्ति शिल्पों का नामों निशान मिटकर मात्र इतिहास में शेष रह गया है। आवश्यकता है इन महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्मारकों में छिपे रहस्यों को उदघाटित करने की। मुझे

विश्वास है जैसे नवागढ़ में छिपे आयाम उजागर हुये हैं, इसी प्रकार महोबा, संलक्षणपुर, दुधही, चांदपुर आदि प्राचीन नगरों की भूमि में न जाने कितने रहस्य छिपे हैं। मेरा शासन प्रशासन एवं पदाधिकारियों से निवेदन है सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के पुनीत कार्य को सम्पादित कर विरासत को गौरवान्वित करें।

सन्दर्भ सूची

1. चित्रकूट (रामायण), चेदि (महाभारत), दशार्ण (मेघदूत), चि.चि.टों. (सी.यू.की) चीनी यात्री हवेनसांग, गोल्लदश (कुवलयमाला कहा) जेजाक्भुक्ति, युद्धदेश, मध्यदेश, विन्ध्येलखण्ड, वज्रदेश, बुन्देलखंड आदि।
2. (क) कुवलयमालाकहा, उद्यातनसूरि, भाग-2 पृष्ठ 252, (ख) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरेलाल तिवारी पृष्ठ 3
3. चंदेल और उनका राजत्व काल, केशवचन्द्र मिश्र, पृष्ठ 202-203
4. जैन शिलालेख संग्रह, भाग-4, ज्ञानपीठ दिल्ली
5. विदिशा का वैभव
6. बुन्देलखण्ड का पुरातत्व - डॉ. एस.डी त्रिवेदी पृष्ठ 15
7. (क) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरेलाल तिवारी पृष्ठ 19-20
   (ख) आर्कियोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया रिर्पोट, भाग-10, पृष्ठ 101
8. दा हिस्ट्री ऑफ दा गुर्जर प्रतीहार्स, डॉ. बैजनाथ पुरी, पृष्ठ 145
9. जैन प्रतिमा विज्ञान, डॉ मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, प्रकाशकीय दशरथ जैन पृ. 27
10. बुन्देलखण्ड का पुरातत्व, डॉ. एस.डी. त्रिवेदी पृष्ठ 15
11. बुन्देलखण्ड का इतिहास और जैन पुरातत्व, प्रो. दिगम्बर दास जैन पृ. 155
12. बुन्देलखण्ड का पुरातत्व, एस.डी त्रिवेदी, पृष्ठ 35 एवं 53
13. एपिग्राफिका इण्डिका, भाग-1 पृष्ठ 135-136
14. खजुराहो का जैन पुरातत्व, डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी पृ. 27
15. खजुराहो का जैन पुरातत्व, डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी पृ. 27
16. दा अर्ली रूलर्स ऑफ खजुराहो, शिशिर कुमार मित्र पृष्ठ 205-206
17. नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी पृ. 14
18. बुन्देलखण्ड का नवोदित तीर्थ नवागढ़, डॉ. कस्तूरचन्द्र सुमन, गोलापूर्व मई 2013
19. जैन शिलालेख संग्रह भाग-4 भारतीय ज्ञान पीठ, दिल्ली
20. पटेरिया बैठक रिपोर्ट, डॉ. यशवंत मलैया, कोलोराडो स्टेटयुनिवर्सिटी
21. जैनेन्द्र सिद्धांत कोश, भाग-1 पृष्ट 325
22. कालंजर प्रबोध, डॉ. हरिओम तत्सत् ब्रह्म शुक्ल पृष्ठ 48
23. चंदेल कालीन महोबा एवं जनपद हमीरपुर और महोबा के पुरावशेष, वासुदेव चौरसिया, पृष्ठ 31
24. खजुराहो प्रतिमायें, डॉ. उर्मिला अग्रवाल, पृष्ठ 9
25. बुन्देलखण्ड का पुरातत्त्व, डॉ. एस.डी.त्रिवेदी, पृष्ठ 90-91
26. जल प्रबन्धन बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनायें, हरिविष्णु अवस्थी, पृ. 32
27. (क) ऑर्कियो लॉजीकल सर्वे रिपोर्ट भाग-7 पृष्ठ 14

(ख) चंदेल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, डॉ. अयोध्या प्रसाद पांडेय पृष्ठ 104
28. (क) अहार के अभिलेख डॉ कस्तूरचंद्र सुमन
(ख) गोलापूर्व डायरेक्ट्री पं. मोहनलाल काव्यतीर्थ
(ग) प्राचीनाभिलेखाः डॉ. भागचन्द्र भागेन्दु
29. (क)बुन्देलखण्ड का वृहद इतिहास, डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी त्रिपाठी, पृष्ठ 19
(ख) कालंजर प्रबोध डॉ. हरिओम तत्सत् ब्रह्म शुक्ल पृष्ठ 48
(ग) विंध्यक्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल डॉ. कन्हैयालाल अग्रवाल पृष्ठ 144
(घ) पुरातात्त्विक सर्वे रिर्पोट (महरौनी) डॉ. अम्बिका प्रसाद सिंह
30. नवागढ़ एन्टीक्वीटीज फ्राम दा चन्देला पीरियड़, डॉ. यशवंत मलैया, पृष्ठ 1
31. फलहोड़ी बड़ागाँव वैभव स्मारिका, प्राचीनतम जैन तीर्थ फलहोड़ी बड़ागांव की पड़ताल, हरिविष्णु अवस्थी पृष्ठ 55
32. गोलापूर्व जैन जनवरी-जून 2020 राजेन्द्र महावीर
33. अतिशय क्षेत्र अहार के प्राचीन शिलालेख, पं. गोविन्ददास कोठिया
34. बुन्देलखण्ड का नवोदित तीर्थ नवागढ़, डॉ. कस्तूर चन्द्र सुमन गोलापूर्व मई 2013
35. (क)विलक्षण तीर्थ एवं कला क्षेत्र नवागढ़, डॉ मारुतिनदंन प्रसाद तिवारी, अर्हत वचन 2018
(ख) बुन्देलखण्ड का नवोदित तीर्थ नवागढ़, डॉ. कस्तूरचन्द्र सुमन गोलापूर्व मई 2013
(ग) श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नावई नवागढ़ नंदपुर, डॉ के.पी. त्रिपाठी
(घ) नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी
36. (क) नवागढ़ (नंदपुर) पाषाण युग का एक सांस्कृतिक क्षेत्र, डॉ. गिरिराज कुमार आगरा पृष्ठ 3
(ख) विलक्षण तीर्थ एवं कला क्षेत्र नवागढ़, डॉ. मारूतिनंदन प्रसाद तिवारी
(ग) भारतीय इतिहास में प्रागैतिहासिक क्षेत्र नवागढ़ का योगदान, ब्र. जयकुमार निशांत पृष्ठ 4
37. (क) दा इंडियन ऐन्टीक्वेरी भाग 20, अक्टूबर 1891 पृ. 351-352
(ख) खंडेलवाल समाज का इतिहास, डॉ. कस्तूरचन्द्र कासलीवाल पृ.
(ग) चारित्रधर्म प्रकाश (चारित्रसार) आचार्य चामुण्डराय पृ. 309
38. (क) शिलालेख संग्रह भाग 1 भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली
(ख) तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग 4, डॉ. नेमीचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य पृ. 441-443
39. नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी पृष्ठ 54
40. (क) बुन्देलखण्ड का पुरातत्त्व, डॉ एस.डी. त्रिवेदी चित्र क्रमांक 13
(ख) रिपोर्ट्स ऑफ टूर्स इन बुन्देलखण्ड एण्ड मालवा इन 1874-75, 1876-79 ए कनिंघम भाग 10 प्लेट 32
41. (क) बुन्देलखण्ड का वृहद इतिहास, डॉ. के.पी त्रिपाठी पृष्ठ 19
(ख) हमारे प्रेरक, डॉ. पं. विश्वनाथ शर्मा, पृष्ठ 4
(ग) ओरछा का इतिहास, ठाकुर लक्ष्मण सिंह गौर पृष्ठ 33
(घ) ऑर्कियोलॉजीकल सर्वे रिर्पोट भाग 10 पृष्ठ 98-99
(ड) ऑर्कियोलॉजीकल सर्वे रिर्पोट भाग 21 पृष्ठ 173-174